बढ़ते वीर जवान

(महाकाव्य)

महोपाध्याय माणकचन्द रामपुरिया

कलासन प्रकाशन
कल्याणी भवन, बीकानेर (राज.)

सारस्वत समर्पणः-

बढ़ते वीर जवान तुम्हीं को-
करता आज समर्पित;
तेरी उज्ज्वल गाथाएँ हैं-
मातृ भूमि को अर्पित।

बजती है रण-भेरी वीरो।
अपने पाँव बढ़ाओ;
मेरे पावन भाव-सुमन को-
ग्रहण करो, अपनाओ।।

महोपाध्याय माणकचंद रामपुरीया

आह्वान

युद्ध .... युद्ध .... युद्ध

युद्ध की भयंकर विभीषिका हमारे समक्ष है। हाँ यह एक युद्ध ही है। एक अघोषित युद्ध हमारे सिर थोप दिया गया है।

कश्मीर-श्रीनगर के उत्तर का कारगिल क्षेत्र ..

नियत्रण रेखा के इस पार बिलकुल भारतीय क्षेत्र में पाकिस्तान के बम बरसने लगे। गोला-बारी होने लगी। सारा इलाका धुएँ में निमज्जित हो गया।

यह कोई साधारण घटना नहीं है। यह हमारी अस्मिता का प्रश्न है। हमारी भूमि को अनधिकृत रूप से हथिया कर अपने कब्जे में करने की बहुत बड़ी साजिश है।

पाकिस्तानी सेना घुसपैठियों के रूप में पाकिस्तानी शस्त्रास्त्रों के साथ प्रत्यक्ष युद्ध में संलग्न है।

किन्तु बार-बार उसकी ओर से यही कहा जाता है कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं है। घुसपैठियों पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है। किन्तु, यथार्थ ठीक इसके विपरीत है।

हमारे वीर जवान उस दुर्गम क्षेत्र में अपना शौर्य दिखा रहे हैं। और.. दुश्मन के पाँव उखड़ रहे हैं।

आज सारा राष्ट्र उद्वेलित है। जगह-जगह रक्तदान शिविर खोले गए हैं। जवानों के लिए प्रत्येक देशवासी रक्तदान करने के लिए तत्पर है। इतना ही नहीं, तन-मन-धन सब कुछ वीर जवानों के लिए अर्पित किए जा रहे हैं।

हमारे देश के सैकड़ों जवान शहीद हुए हैं। अपने उन सभी शहीदों के प्रति हम पूरे सम्मान के साथ श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

आज सम्पूर्ण राष्ट्र में एक लहर-सी आ गयी है। ऐसे में साहित्यकार मौन नहीं रह सकता। उसका भी कर्तव्य है। साहित्य के माध्यम से वह भी देश के दुश्मनों के साथ युद्ध-भूमि में युद्ध के लिए कटिबद्ध है। अपने वीर जवानों के साथ कधे-से-कधा मिलाकर उनमें नयी शक्ति का सचार कर रहा है।

"बढ़ते वीर जवान"- इन्हीं भावनाओं का प्रतिफलन है।

यह सच है कि भारत ने अनवरत चाहा कि दोनों देशों के बीच मैत्री बनी रहे। भारत के प्रधानमत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी की लाहौर-यात्रा इसका प्रबल प्रमाण है।

वस्तुत पारस्परिक विमल भाव-मंथन के नवनीत स्वरूप अपनत्व और निर्मल प्रेम ही की नींव पर सौहार्द्र का भव्य भवन निर्मित किया जा सकता है।

किन्तु स्पष्ट है, यदि प्रतिपक्ष दूसरे को कायर, डरपोक और भीरू समझकर घोर युद्धोन्माद में ही झूमता हुआ प्रत्यक्ष अथवा परोक्षत. युद्ध थोप ही दे तो क्या. ? दूसरा पक्ष युद्ध के लिए सतर्क होने और उसके आक्रमण का मुँह तोड़ जवाब देने के लिए सन्नद्ध नहीं हो जाएगा उत्तर स्पष्टत सकारात्मक है।

हिंसक पशु का सामना निरस्त्र और शान्त रह कर कैसे किया जाएगा? अपने बचाव और उससे मुकाबले के लिए शस्त्र उठाने ही पड़ेंगे।

इन्हीं भावनाओं से उद्वेलित कारगिल के बर्फानी क्षेत्र में तैनात वीर जवानों के लिए यह एक भेंट है।

इसे पढ़ कर जवानों की रगों में थोड़ी भी उष्णता आई तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

तथास्तु।

41 डी, श्यामाप्रसाद मुखर्जी रोड
कलकत्ता-26

माणकचंद रामपुरिया

एक

महाभयंकर युद्ध छिड़ा है;
सीमा पर ही शत्रु भिड़ा है।
लेकिन हम भी नहीं रुकेंगे;
रिपु के आगे नहीं झुकेंगे।

निश्चय समझो कदम बढ़ेंगे-
दुश्मन का सिर फोड़ चढ़ेंगे।
दूर हिमालय की चोटी पर;
आयेंगे हम शंख फूंक कर।

दुश्मन सोच रहा है मन में-
मेल नहीं है यहाँ वतन में।
इससे ही हिम्मत बढ़ आई;
उसने दूषित चाल दिखाई।

दूर कारगिल का वह प्रांतर-
बर्फ सिर्फ गलती है झर कर।
शून्य हिमालय की ऊँचाई-
घटा बर्फ की रहती छाई।

इस पर दुश्मन चुपके आया-
मन ही मन था वह भरमाया।
ऊपर चौकी नयी बनायी-
माथे पर थी सामत आयी।

वर्षों से था चलता आया-
आँधी-वर्षा सहता आया।
सोच रहा था धीरे-धीरे-
पहुँचेंगे हम गंगा तीरे।

किन्तु हमारा देश अचल है-
इसमें जीवन शक्ति प्रबल है।
दौड़ पड़े सब सैनिक उठकर-
भारतवासी जन-जन जुटकर।

दुश्मन के सब छक्के छूटे-
उनके सब मनसूबे टूटे।
भारत सब दिन रहा अजय है-
गुंजित उसकी ही जय-जय है।

दो

देश हमारा बहुत पुरातन-
इसकी बात निराली;
इसकी मिट्टी स्वयं जागकर-
करती है रखवाली।

नद-नाले या मिट्टी-पर्वत-
है पहचान न केवल;
भारत तो भावों का रक्षक-
जो है प्रांजल निर्मल।

प्रेम और सौहार्द्र भाव का-
सदा भुवन में पोषक;
शान्ति-अहिंसा-सत्य न्याय का-
रहा यही उद्‌घोषक।

यहाँ विश्व-बन्धुत्व भाव का-
करते हैं सब पालन;
न्याय-नीति औ सद्धर्मों का-
होता नित परिचालन।

मानवता के उच्च गुणों का-
यही देश है रक्षक,
शत्रु-भाव लेकर जो सम्मुख-
आया उसका भक्षक।

यों यह अन्य देश-सा दिखता-
माटी-पत्थर-पानी;
औरों से पर बहुत भिन्न है-
इसकी अमर कहानी।

यही देश है जहाँ सूर्य की-
पहली किरण जगी थी;
इस माटी में ज्ञान-ज्योति तो-
जगने स्वयं लगी थी।

वेद-ऋचाओं का शुभ गायन-
गूँजा यहीं गगन में;
मानवता की दिव्य सभ्यता-
जागी यहीं भुवन में।

मानव ने मानव को जाना-
और यहीं पहचाना;
अन्य देश में अपने भी हैं-
अपनों से बेगाना।

औरों को भी हमने ही तो-
अपना सदा बनाया;
दोष क्षमाकर शत्रु-जनों को-
हँसकर गले लगाया।

भारत ही है देश जहाँ नित-
उच्चादर्श रहा है;
गंगा-जमुना का पावन जल-
इस पर सदा वहा है।

इसीलिए हम साथ किसी के-
कुछ अन्याय न करते;
लेकिन जो अन्यायी है उससे-
तिलभर कभी न डरते।

सच है, हम हैं शान्ति प्रकृति के-
नहीं चाहते लड़ना-
इसको जो कमजोरी माने-
उससे पड़ता भिड़ना।

शान्ति चाहते, किन्तु दूसरा-
शान्त न रहने देगा;
चुपके-चुपके घुसकर घर में-
हम पर वार करेगा।

ऐसे में हम चैन न लेंगे-
उठकर तुरत भिड़ेंगे;
शत्रु-दलों पर महाकाल-सम-
बनकर वज्र गिरेंगे।

✦ ✦ ✦

सच है हम थे शान्त भाव में-
अपने घर में बैठे;
दुश्मन बनकर घुसपैठी, घुस-
आए ऐंठे-ऐंठे।

सहसा हिमगिरि की घाटी में-
धुँआ उठा कुछ काला;
जाग उठा फिर शान्त कारगिल-
धधकी भीषण ज्वाला।

वीर सपूत अमर अवनी के-
जाग उठे अकुला के;
दुश्मन के गढ़ तक चढ़ आए-
अपना शंख बजा के।

भारत के इन वीरों को तो-
कोई टोक न सकता;
वज्र वेग से बढे चरण को-
कोई रोक न सकता।।

तीन

दूर हिमालय की वर्फीली-

दिखती छवि जो झिलमिल;

शून्य प्रांत है, लोग इसी को-

कहते सुन्दर करगिल।

पास इसी के काशमीर है-
सुषमा का भण्डार;
देश-देश के लोग यहाँ नित-
आते हैं हरवार।

इसकी शोभा बड़ी अतुल है-
विधि का शुभ निर्माण;
सुवह-शाम सौन्दर्य देवता-
गाते गीत महान।

प्रात काल जब सूर्य निकलता-
खिलती लाली अनुपम;
तरह-तरह की चिड़ियों का तब-
वज उठता है सरगम।

छोटे-मोटे झील भरे हैं-
कमल-अमल नव फूलों से-
नाव-शिकारे तैर रहे हैं-
पवन-डोल पर झूलों से।

चित्ताकर्षक छवि है न्यारी-
नव-नव रस अनुगामी;
लगता जैसे कामदेव हैं-
वैठे वनकर स्वामी।

फूल खिले हैं मधुपावलियाँ-
गुन-गुन गीत सुनाती;
दल के दल कलियों के आगे-
तितली नृत्य दिखाती।

पवन सुरभि ले कलि-कलि से-
मन्द-मन्द मुस्काता;
फूलों के सम्पुट में भरकर-
सौरभ मधुर लुटाता।

आँखें टिकतीं जहाँ-जहाँ पर-
वहीं-वहीं रुक जाती;
इस सौन्दर्य शिखर के सम्मुख-
सुषमा शीश झुकाती।

धरती का सौन्दर्य सिमट कर-
लगता शेष वहीं है;
इससे बढ़कर छटा मनोरम-
भू पर कहीं नहीं है।

नील गगन में झुण्ड-झुण्ड नित-
पंछी दिखते उड़ते;
शस्य-श्यामला धरती को फिर-
देख अचानक मुड़ते।

इनके रसमय गीत श्रवणकर-
हवा थिरकने लगती;
तरु-तरु के नव पल्लव-दल में-
नयी चेतना जगती।

कलि-कलि पर नव अलियों का दल-
नूतन राग सुनाता;
शीतल-शान्त पवन-झोंकों पर-
नव पराग लहराता।

जड़-चेतन पर सुषमित छवि की-
खिली हुई है रेखा;
तुरत मुग्ध हो जाता जिसने-
एक बार भी देखा।

वेद-पुराण सभी कहते हैं-
सदा स्वर्ग बलिहारी;
लेकिन इस धरती की शोभा-
उससे भी है न्यारी।

इस शोभा की नहीं कहीं है-
इस धरती की उपमा;
किसी नयन ने कभी न देखी-
ऐसी अद्‌भुत सुषमा।

✦ ✦ ✦

पास इसी के भरत-भूमि के-
अपनेपन की सीमा;
यही नियंत्रण रेखा, भौतिक-
ज्ञान-मान उद्‌बोधक।

इस रेखा के इधर कहाता-
अपना करगिल क्षेत्र;
देख रहे इस भरत-खण्ड को-
दुनिया भर के नेत्र।

घुसपैठी बन दुश्मन का दल-
चुपके-चुपके आया;
वर्षों के इस क्रम में वह था-
भ्रम में स्वयं भुलाया।

लेकिन जागे जब जवान, तब-
भागा रिपु घबड़ा के;
मिला न कुछ भी दुश्मन दल को-
अपने प्राण गँवा के।।

चार

आखिर क्यों आए
घुसपैठी
क्या सोचा था
मन में?

चैन नहीं हम
रहने देंगे
गाँधी के
पुण्य वतन में।

ाना, हम थे
भाई-भाई
एक देश के
रहनेवाले।

संकट में तब
अलग हुए थे
बादल थे जब
काले-काले।

ुम ने जोर
लगाया था औ'
माँगा था
बटवारा;

सोचे थे तुम
चमक उठेगा
क्षण में
भाग्य तुम्हारा।

किन्तु हुआ क्या-
देख रहा जग
धधकी
भीषण ज्वाला,

राख हुआ है
गेह तुम्हारा
क्रान्ति
जगाने वाला।

अपना नीड़
जलाकर आए;
हम पर
रोष जताने

किया नहीं कुछ
लेकिन आए
हमको
आँख दिखाने।

शान्ति हमारी
समझ न पाए
कहते-हो-
कमजोरी।

तो फिर आओ
स्वयं देख लो;
नहीं चलेगी
अब बरजोरी।

जो भी आए,
सुने, ध्यान से-
झटपट
तुम सब भागो;

भारत में कुछ
गड़बड़ करने के-
सब मनसूबे
त्यागो।

जाग उठा है
देश समूचा
दाल न अब
गल पायेगी।

भारत माता की
संतानें
रिपु को
धूल चटायेगी।

कहते पाकिस्तान
मगर
नापाक इरादे
रखते हो,

ऊपर-ऊपर
प्यार दिखाते
घात हृदय पर
करते हो।

सुनो नाद जो
जाग रहा है
भरत-भूमि के
अम्बर में;

नन्हें-मुन्नों
तक को देखो
हँसते
पहुँच समर में।

कोई इन्हें न
रोक सकेगा
जाना तुझे
पड़ेगा;

मातृ-भूमि की
रक्षा खातिर;
जन-जन
आज लड़ेगा।

बोल रहे हैं
आज सभी जन
निर्भयता
की वाणी;

भू पर जीवित
वीरों की ही
रहती
अमर कहानी।

एक-एक बच्चा
आया है
बनकर
नव अंगारा;

गोली खाकर
भी कहता है
जय-जय
देश हमारा।।

पाँच

दुश्मन सोच रहा था

मन में-

चाल यहाँ

चल जायेगी।

आज स्वल्प जो
काश्मीर है
उसकी परिधि
वढ़ जायेगी।

चुपके-चुपके
घात लगाकर
वह तूफान
उठायेंगे;

शान्ति-प्रिय
भारत के जन-जन
ठगे-ठगे
रह जायेंगे।

जान न पाये
वड़े नाग की
वाँम्वी में ही
हाथ दिया है;

वोल-वोल क्यों
तू ने ऐसा
यह षड्यन्त्र
किया है।

याद नहीं क्या?
कुछ दिन पहले-
शान्ति-यान
हम लाये थे

शान्ति-प्रेम
सौगात हमारी
नायक लेकर
आये थे।

वह 'वस' केवल
जड़ भौतिकता
का ही
नहीं दिखावा था;

भारत-भर के
स्नेह-प्रेम का
उसमें
निश्छल दावा था।

भूल गए तुम-
मित्र भाव का
हमने हाथ-
बढ़ाया था;

मन में जो
कटुता थी
उसको हमने
दूर भगाया था।

लेकिन तुमने
भाव न समझा
सोचा-
मेरी लाचारी;

प्रभूत व्यंग करती
सी लगती
धन्य बुद्धि की
बलिहारी।

तो फिर ठहरो
हम आते हैं
देश समूचा
वोल रहा;

वच्चा-वच्चा
डटकर रण में
पोल तुम्हारी
खोल रहा।

तुम कहते हो-
ये घुसपैठी
नहीं तुम्हारे
वश में-

तो फिर, तीर
कहाँ से आये
उनके उस
तरकस में।

गोले-बारूद
शस्त्र तुम्हारे
लेकर ही
लड़ते हैं;

और तुम्हारे
सैनिक सजकर
सीमा पर
भिड़ते हैं।

फिर भी तुम कहते
हो मानो
तुम निर्दोष
बड़े हो;

देखो, अपना मुंह
सीमा पर
कालिख पोत
खड़े हो।।

छह

भारत के कण-कण से गुंजित
आज एक ही वाणी,
मातृ-भूमि की रक्षा के हित
देंगे हम कुर्बानी।

जैसे भी होगा, दुश्मन को-
निश्चय दूर करेंगे;
भारत की धरती से हटने-
को मजबूर करेंगे।

हम वंशज हैं वीर शिवा के-
राणा, लक्ष्मीवाई के;
हम अभ्यस्त नहीं हैं छिपकर-
करने घृणित लड़ाई के।

दुश्मन के सम्मुख आकर हम-
मंशा पूरी करते;
वीर-व्रती हम बढ़ते पथ पर-
कभी न रिपु से डरते।

शान्त भाव से प्यार जताते-
सब को गले लगाते;
किन्तु कुटिलता जो करता है-
उसको सबक सिखाते।

देख-परख कर ही हम बढ़ते-
यों ही नहीं धधकते;
जिस सीमा तक संभव होता-
दुश्मन को भी सहते।

लेकिन कोई अति जब करता-
शान्त नहीं रह सकते;
दुश्मन की धरती पर हम ही-
वज्र गिराया करते।

भारत का भू-भाग कहीं भी-
कोई कैसे लेगा;
वीर-प्रसू धरती का कण-कण-
अपनी ही बलि देगा।

✦ ✦ ✦

सुन्दर है कश्मीर हमारी-
मातृ-भूमि की धरती;
होने कभी न देंगे इसको-
बारूदों से परती।

है डल झील सुहानी जिसमें-
कमल-अमल दल खिलते;
पक्षी कलरव करते इसके-
निर्मल जल पर तिरते।

दुश्मन के पैरों के नीचे-
इसे न आने देंगे;
अत्याचारी कोई आए-
डट कर लोहा लेंगे।

वूलर झील प्रकृति की अनुपम-
शोभा की फुलवारी;
यहाँ सदा नव शोभा रहती-
जाग्रत क्यारी-क्यारी।

उधर अनन्त नाग में कैसे-
झर-झर झरने झरते;
वेरी नाग से कितने भू पर-
शतलता सुख भरते।

प्रकृति-नटी के ये हैं सारे-
मनमोहक आभूषण;
इन पर कोई आँख गड़ाए-
यह भीषण उत्पीड़न।

चोरी क्या? दुश्मन इस घर में-
पाँव नहीं धर सकता;
इसकी खातिर भरत-भूमि का-
जन-जन तक मर सकता।

✦ ✦ ✦

एक बार हम अंग कटाए-
पाकिस्तान बना था;
देखे दुनिया उसकी जड़ में-
कितना खून सना था।

वतन कटा, हम लोग बँटे फिर-
धरती औ' आकाश बँटा;
सच मानों हम सभी जनों के-
जीवन का विश्वास बँटा।

एक-एक घर बँटा कहीं भी-
शान्ति नहीं पर आई;
एक अजब बेचैनी-सी ही-
रहती हरदम छाई।

धर्म-भेद की जिस कटुता पर-
पाकिस्तान बना है;
उसी घाव का सड़ा चँदोवा-
अब भी वहाँ तना है।

इससे हटकर राष्ट्र-धर्म का-
वहाँ न कोई बल है;
भारत के तो साथ सदा ही-
करता रहता छल है।

करगिल के ही पास पहुँचकर-
अपना किया ठिकाना;
तोलोलिंग पहाड़ी पर ही-
चाहा ठौर जमाना।

पुनः द्रास सेक्टर तक जाकर-
चौकी एक बनाई;
और यहीं से छेड़ रहा था-
अपनी घृणित लड़ाई।

लेकिन अब हम जाग गए हैं-
उसे न जमने देंगे;
उसके कुत्सित कर्मों का फल-
निश्चय उसको देंगे।

✦ ✦ ✦

आज अतुल अभियान चला है-
लोग दौड़ते आते;
दूर भगायेंगे दुश्मन को-
बात यही दुहराते।

जन-जन तक सब यही बोलते-
शत्रु नहीं टिक पायेगा;
आसमान में सब से ऊँचा-
राष्ट्र-केतु फहरायेगा।

भारत की है भूमि जहाँ तक-
दलित न होने देंगे;
क्रूर शत्रु के घातों का हम-
गिन-गिन बदला लेंगे।

दुश्मन बन कर आनेवाला-
कभी नहीं बच सकता;
इस धरती के बलिदानों की-
गाथा कण-कण कहता।।

सात

भारत का सिरमौर हिमालय;
स्वच्छ प्रकृति का गेह निरामय;
करता हम सब का नित रक्षण;
संकट-मोचन शिखर विलक्षण।

इसके सबसे उच्च शिखर पर-
भूतनाथ हैं अवढर शंकर;
ग्रहण करें जन-मन का वन्दन-
मंगल दायक असुर निकन्दन।

जय-जय भोले बाबा जय-जय।
अन्तर्यामी स्वामी जय-जय।
हम भारत के हैं अधिवासी-
तू है सब की मंगल काशी।

तुमको मन के गीत सुनाते-
चरणों में हम शीश नवाते।
तुम्हीं मनोरथ पूर्ण करोगे-
हम में पौरुष-शक्ति भरोगे।

जीवन में तुम सद्-विचार दो-
सब में सात्विकता उतार दो।
भटक रहे जो उनको औढ़र-
सत्-पथ पर तुम कर दो तत्पर।

हममें पुण्य विवेक जगा दो-
दुःख-दैन्य भय-क्रोध भगा दो।
निर्भय हम सब रहें भुवन में;
ईर्ष्या-द्वेष न जागे मन में।

अपना हम अधिकार जान कर-
बढ़ें निरन्तर प्रगति-पथ पर;
न्याय-नीति पर सदा रहें हम-
बात प्रेम की सदा कहें हम।

यदि फिर कोई आँख दिखाये-
तो हम उस पर वज्र गिरायें;
रिपु को सदा अधीर करेंगे-
अपना हम कश्मीर न देंगे।

जय-जय ओढ़र दानी जय हो-
भारतवासी सदा अभय हो।
एक बार फिर ताण्डव कर दो-
रग-रग में अब बिजली भर दो।

✦ ✦ ✦

हिम गिरि की है सुखद तराई-
यहाँ प्रकृति भी है सुखदाई।
मीठे-मीठे सेब यहाँ के-
तरह-तरह के फूल यहाँ के।

सब को लगते हैं मन-मोहक-
चेरी से फल तन के पोषक;
लोग यहाँ के शिल्प सुसज्जित-
सुन्दरता में सदा निमज्जित।

दफ्तो मीर अमान

नये-नये कालीन बनाते-
शाल-दुशाले सदा सजाते।
सुन्दरता के सभी पुजारी-
कलाकारिता इनकी न्यारी।

भारत के हैं ये सब रक्षक-
कला-ज्ञान के हैं संरक्षक।
इनको नष्ट न होने देंगे;
अपने को कुर्बान करेंगे।

हैं 'नसीम' औ' 'नगीन' बगीचे,
लगते ज्यों मखमली गलीचे;
इसकी सुषमा कहाँ मिलेगी?
कलिका ऐसी कहाँ खिलेगी?

हम सब सुषमा का यह सागर-
शुष्क न होने देंगे क्षणभर।
पास इसी के घुसकर, दुश्मन-
चाल दिखाने आया उन्मन।

चुपके से घुसपैठी बनकर,
पाकिस्तानी सेना तनकर;
जगह-जगह पर शोर मचाती,
वर्षों से थी जोर दिखाती।

लेकिन अव हम जाग गए हैं-
वने सभी श्रृंगार नए हैं।
कदम-कदम की यह हरियाली-
रिपु को करनी होगी खाली।

भारत की यह भूमि सही है,
अपनी ही यह भव्य मही है।
इसको कोई रौंद न सकता,
राष्ट्र-धर्म की है यह दृढ़ता।

यही शपथ है सव के मन की-
रखवाली होगी उपवन की।
वीर जवान वढ़े हैं पथ पर-
विजय-केतु ले अपने रथ पर।

उनके साथ देश है सारा-
अजय रहेगा राष्ट्र हमारा।
विजय हमारी होगी निश्चय-
गूंज रहा स्वर नभ में जय-जय।।

आठ

भारत की यह पुण्य धरा है-
इसमें उज्ज्वल भाव भरा है;
माटी-पानी-सरिता-पर्वत-
करते इसे न केवल चिन्हित।

भाव प्रवणता इसका बोधन,
करते सब जन नित उद्घोषण।
भावों का यह प्रबल समुच्चय,
इसकी निधियाँ रहती अक्षय।

मानवता के दिव्य भाव में-
शान्ति-प्रदायी प्रकृति छाँव में-
जीवन का रस मिलता प्रतिपल,
खिलता मानस का नव उत्पल।

राष्ट्र समूचा सधा हुआ है,
एक भाव में बँधा हुआ है।
उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम-
एक भाव सब ओर समाहित।

कहीं एक नस दुखती क्षणभर-
पूरा भारत होता कातर।
सब अभेद बन स्वर-विभोर में-
गुंथ जाते हैं एक डोर में।

हो कश्मीरी या मद्रासी-
रहे असमिया, बँगलावासी;
बम्बइया या मध्य देश का-
हो बिहार या उत्त्-प्रदेश का।

पंजावी या राजस्थानी-
सव हैं केवल हिन्दुस्तानी,
सव की है पहचान यही-
सदृढ़ एकता शान यही।

भिन्न-भिन्न हैं रंग सभी के-
भिन्न-भिन्न हैं ढंग सभी के।
चाहे कोई भाषा वोले-
कोई वेश पहनकर डोले।

लेकिन सबमें एक भाव है-
सबके जी में एक चाव है;
अलग-अलग सब गेह-निवासी-
मिलजुल कर सब भारतवासी।

एक यही पहचान अमर है-
भारत सब का ज्ञान प्रखर है;
एक वृन्त पर, फल स्वतंत्र है-
भारत सब का मूलमंत्र है।

कोई जहाँ कहीं रह जाए-
भारवासी ही कहलाए;
जन-जन में कुछ भेद नहीं है;
अन्तर-तर में खेद नहीं है।

अलग-अलग सब, पर अभेद है-
एक तरह का रक्त-स्वेद है।
जहाँ कहीं भी ये जाएँगे-
भारतीय ही कहलाएँगे।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई-
मिले जैन मिल लड़ी लड़ाई।
जब भी संकट के दिन आए-
सबने मिलकर शौर्य दिखाए।

आज पुनः जब छाये बादल-
हुए अचानक जन-जन चंचल;
सबने ही उद्घोष किया है-
अपना संचित कोष दिया है।

जहाँ कहीं भी पड़ी सुनाई-
दुश्मन की सैना है आई;
घुसपैठी बन छद्मवेश में-
आया कोई हिन्द देश में।

उत्तर से दक्षिण तक सहसा-
ज्वार अचानक मन में सरसा;
बिजली दौड़ी सब के तन में-
उमड़ा भीषण ज्वार वतन में।

घर-घर से निकले सब गाते-
वीर जवानों हम हैं आते।
मत समझो तुम दूर किनारे-
देश समूचा साथ तुम्हारे।

जगह-जगह है तेरा वन्दन-
जन-जन करते हैं अभिनन्दन।
वीर, तुम्हीं अभिमान देश के-
मान और सम्मान देश के।

आज गर्व है सबको तुम पर-
तुम पर होते सब न्यौछावर;
भारत माँ के तुम सपूत हो-
धर्म-न्याय के अग्रदूत हो।

कण-कण भू का बोल रहा है-
अपना अन्तर खोल रहा है;
तुम हो भरत-वंश की आशा,
दृढ़ भारत की नव परिभाषा।।

नव

जाग रहा है देश समूचा–
    आई नयी रवानी;
बालक-वृद्ध सभी में देखो–
    जागी नयी जवानी।

सब कहते हैं सब से आगे-
मेरा यान चलेगा;
हम बढ़नेवालों के पथ में-
सूरज नहीं ढलेगा।

कदम-कदम सब बढ़ते आते-
हाथों में है डण्डा;
दूर गगन तक फहरा रहा है-
मातृ-भूमि का झण्डा।

सब कहते हैं मातृभूमि की-
यह है अमर निशानी;
दिग-दिगन्त तक गूँज उठी है-
इसकी अमृत वाणी।

हम न रुकेंगे, नहीं झुकेंगे-
बढ़ते सदा रहेंगे;
बर्फीले पर्वत के ऊपर-
चढ़ते सदा रहेंगे।

देखें किसमें कितना दम है-
कौन रोकने आता;
शेरों की मांदों में गीदड़-
बैठ कभी क्या पाता?

खौल रहा है व्याकुल अम्बर-
धरती डोल रही है;
धुंध बाँध कर दिशा-दिशा तक-
जगकर बोल रही है।

कदम हमारे नहीं रुकेंगे-
आँधी हो या पानी;
भरत-भूमि के वच्चों तक में-
हिम्मत है चट्टानी।

उत्सव-जैसी नव उमंग-सी-
सव में आज जगी है;
सीमा पर हम पहले पहुँचे-
सव में होड़ लगी है।

कारा के कैदी भी कहते-
हम भी करगिल चलते;
गोले-वारूद और तमंचों-
से हम खेला करते।

भावुक बनकर कहते- हम सव-
देश भक्त हैं पक्के;
सम्मुख आते दुश्मन दल के-
छूट जायेंगे छक्के।

माना हैं अपराधी लेकिन-
वेचा देश न अपना;
मेरे दृग में भी पलता है-
मातृ भूमि का सपना।

माना मैंने जठरानल के हित-
ऐसा पाप किया है;
राष्ट्र-प्रेम पर दाग कभी भी-
आने नहीं दिया है।

अपने घर में जो भी करते-
वह है मसला मेरा;
लेकिन कोई मेरे घर में-
लगा न सकता डेरा।

करता जो दुस्साहस ऐसा-
उसको सबक सिखायें;
आज्ञा दे दो वतन वासियों-
सीमा पर हम जायें।

कैदी की ललकार श्रवण कर-
सब में जागी ज्वाला;
मातृ भूमि पर बलि होने को-
जन-जन था मतवाला।

✦ ✦ ✦

दस

देश भक्ति की लहर जगी है-
स्वयं पाँव बढ़ जाते;
मुट्ठी कस कर बच्चे कहते-
हम भी शौर्य दिखाते।

क्रीड़ा की तलवार-तमंचे-
रेंगड़ रहे हैं भू पर;
कहते गोले बारूद से भी-
यह है आगे बढ़कर।

बड़े-बड़े विस्फोटक बम भी-
हम हैं यहाँ चलाये;
जय जवान, मत समझो हम सब-
बच्चे केवल आए।

छोटे-छोटे हम हैं लेकिन-
पाँव बढ़ेंगे निश्चय;
द्रास-केन्द्र से भी हम आगे-
बढ़े चलेंगे निर्भय।

तोलोलिंग पहाड़ी देखो-
बंकर में छिप दुश्मन;
उसे मारपोला से आगे-
पड़ा भागना तत्क्षण।

वह है विक्टोरिया पहाड़ी-
जिसकी खूब ऊँचाई;
उसके आगे तक हमने ही-
सेना है पहुँचाई।

घर-घर के सब बच्चे-बच्ची-
यही बोलते रहते;
दुश्मन के हर कठिन कदम को-
स्वयं तौलते रहते।

माताएँ भी नन्हे दल को-
राह दिखाती रहतीं;
शौर्य-शक्ति-दृढ़ पराक्रमों का-
भाव जगाया करतीं।

वीर जवान बढ़े भारत के-
युद्ध-भूमि में आते;
घर से विदा माँग कर दौड़े-
आते शौर्य दिखाते।

कोई छुट्टी पर था कोई-
ब्याह रचाने आया;
कोई प्यारी बहना को था-
प्यार जताने आया।

कोई प्रेम-डोर में बँधकर-
आया मन बहलाने;
कोई माँ के साथ चला था-
बच्चों को मिलवाने।

कोई रुग्ण पिता की खातिर–
पहुँच गया था घर पर;
कोई घर बनवाने को था–
आया वेतन लेकर।

शान्त–भाव में भरे सभी थे–
भावुक कवि–से लगते;
छूटेगा परिवेश गेह का–
भाव न मन में जगते।

सहसा पड़ा सुनाई करगिल–
में घुस आया दुश्मन;
छद्म वेश में आकर करता–
बल का स्वयं प्रदर्शन।

दौड़े तुरत जवान हमारे–
अपने–अपने घर से;
विद्युत जैसे चम–चम निकले–
भेद घटा अम्बर से।

जो भी जैसे जहाँ पड़े थे–
दौड़े तत्क्षण रण में;
साहस और उत्साह जगाते–
शक्ति प्रबल ले मन में।

घर में बोले माता जी से-
भर कर तेज नयन में;
मातृ-भूमि अब बुला रही है-
जाता हूँ माँ! रण मे।

बोले छोटी बहना से फिर-
अभी तुरत मैं आऊँगा;
लौट युद्ध से आऊँगा, तब-
तेरा व्याह रचाऊँगा।

पत्नी से फिर बोले- कर दे-
झटपट सब तैयारी;
दुश्मन से लड़ने की मेरी-
आई है फिर बारी।

✦ ✦ ✦

जैसे थे जो वैसे दौड़े-
युद्ध-क्षेत्र में आए;
भारत माता की जय कह के-
अपने शस्त्र उठाये।।

ग्यारह

उत्सव-सा है मचा देश में-
सब में जोश भरा है;
महाकाल के सम्मुख भी [illegible]-
कोई नहीं डरा है।

काल स्वयं आकर चल जाता-
हिम्मत पस्त न होती;
विपदाओं में गड़ी आँख भी-
आँसू नहीं पिरोती।

माताएँ हैं खड़ी द्वार पर-
लेकर कुंकुम थाली;
टीका देकर कहती- देखो-
मिटे नहीं यह लाली।

इस कुंकुम में मातृ-हृदय का-
सब अभिमान भरा है;
इसकी लाली में भारत का-
गौरव मान भरा है।

यही तुम्हारे विजय-पंथ में-
होगा पुण्य सहायक;
इसके शीतल स्वस्ति रूप का-
भाव रहे सुखदायक।

माता तिलक लगाकर कहती-
जाओ प्यारे जाओ;
तुझे बुलाते देश-देवता-
विजय-केतु फहराओ।

बहन हाथ में राखी लेकर-
कहती भइया आओ;
रक्षा-कवच पहन कर हमसे-
रण में शौर्य दिखाओ।

रुग्ण पिता उठकर हैं कहते-
जम कर पाँव बढ़ाना;
देश-राष्ट्र के मान तुम्हीं हो-
इसकी लाज बचाना।

नन्हे-मुन्ने कहते- पापा-
हम भी दौड़े आते हैं;
तेरे पीछे चलकर हम भी-
भू की शान बढ़ाते हैं।

एक अजब उत्सव है घर-घर-
कदम-कदम पर मेला;
देश समूचा एक साथ है-
कोई नहीं अकेला।

सीमा पर सब चले कि जैसे-
तीर्थाटन पर जाते;
मातृ-भूमि की वेदी पर सब-
अपना शीश चढ़ाते।

कोई नहीं किसी से कम है-
एक-एक से बढ़कर;
दुश्मन को हैं मार भगाते-
पर्वत तक पर चढ़कर।

पर्वत हो या गहन समुन्दर-
ये सब ओर मिलेंगे;
भरत-भूमि की माटी पर ये-
बनकर फूल खिलेंगे।

जहाँ कहीं भी पड़ी जरूरत-
सबसे आगे आते;
विपदाओं के घन-प्रहार पर-
ये हरदम मुस्काते।

आज पुकारा हिमगिरि ने तो-
ये ही दौड़े आए;
सारा देश खड़ा है इनके-
पीछे शीश उठाए।

संकट से हम कब घबड़ाते?
लक्ष्य सदा है आगे;
जो भी दुश्मन घुस आया है-
सीमा से अब भागे।

बारह

चक्र काल का चलता रहता-
सुख-दुख आते-जाते;
रजनी और दिवा के क्रम भी-
आ-आकर मुस्काते।

कुछ भी अमर नहीं है जग में-
सब कुछ मिटने वाला;
आनेवाला ही बनता है-
क्षण में जानेवाला।

क्षण-भंगुर जीवन को जिसने-
महत् रूप में देखा;
वह छोड़ जाता जग में-
अपनी शाश्वत रेखा।

यों तो, जीने-मरने का तो-
चलता काम निरंतर;
किन्तु देश हित मरने वाले-
हो जाते हैं अ-क्षर।

जो जनमा है, एक दिवस तो-
उसको होगा मरना;
माटी के तन को माटी में-
निश्चय ही है धरना।

यही सत्य है, यही भुवन का-
अटल नियम है शाश्वत्;
इसी नियम पर दक्ष काल का-
चलता चक्र यथावत्।

तब फिर जीवन में जीने का-
जो शुभ कर्म सजाता;
वही अमर होकर इस जग में-
सब दिन नाम कमाता।

जीना है तो, जियो देश की-
खातिर शीश उठाकर;
मातृ-भूमि के कण-कण तक का-
पूरा कर्ज चुका कर।

किसे पता है, उस पर कितना-
भारी बोझ पड़ा है;
सीमा पर चुपके से घुसके-
दुश्मन आज खड़ा है।

एक-एक दुश्मन को गिन-गिन-
बाहर तुरत भगाना है;
सुप्त पड़ा जो अपना पौरूष-
उसको पुनः जगाना है।

बोल रहा भारत का कण-कण-
आओ, वीरों आओ;
मातृ-भूमि अब बुला रही है-
इसकी लाज बचाओ।

देकर अपनी जान हमीं ने-
आजादी है पाई;
इसकी खातिर भारी कीमत-
हमने सदा चुकाई।

याद करो स्वातंत्रय-युद्ध को-
कैसी आग लगी थी;
बच्चे-बच्चे की रग-रग में-
अनुपम शक्ति जगी थी।

भारी कीमत देकर हमने-
जिस धन को है पाया;
जिस पर तन-मन-धन तक
हमने सदा लुटाया।

उसको यों ही छोड़ न देंगे-
रक्षा सदा करेंगे;
इसके कोमल फूलों को हम-
शुष्क न होने देंगे।

देकर सब कुर्बानी हमने-
पाई है आजादी;
होने कभी न देंगे इसकी-
दुश्मन से बरबादी।

बच्चा-बच्चा दौड़ रहा है-
इसकी रक्षा करने को;
डटे हुए हैं सब नर नारी-
इसकी कीमत भरने को।

जो भी कीमत होगी देंगे-
सीमा पर हम आ के;
चैन मिलेगा दुश्मन-दल को-
झटपट दूर भगा के।

जो भी संकट आए हम सब-
पीछे नहीं हटेंगे;
भारत की तिलभर भी धरती-
जाने कभी न देंगे।

धरती-अम्बर बोल रहे हैं-
आओ, वीरों आओ;
शिखर-शिखर पर चढ़कर वीरो-
तुम झण्डा फहराओ।।

तेरह

नमन उन्हें जो तेज पुंज हैं-
धरती के रखवाले;
त्यागी-कर्मठ-राष्ट्र-धर्म की-
राह दिखाने वाले।

सजग रहें हम सदा कि हम से-
कोई स्वत्व न छीने;
खुद भी जीये और सभी को-
सुख से ही दे जीने।

अपनी धरती और गगन में-
खुलकर सैर करेंगे;
भारत माँ को शीश नवाकर-
हम निर्द्वन्द्व रहेंगे।

मित्र-भाव के हम संपोषक-
प्यार सभी से करते;
सत्य-न्याय आदर्श समन्वित-
पथ पर प्रतिपल बढ़ते।

लेकिन कोई आँख दिखाये-
तो हम नहीं सहेंगे;
अपनी पावन वसुन्धरा पर-
कभी न जमने देंगे।

जान भले ही जाये, लेकिन-
जीत हमारी होगी;
हर मोर्चे पर दुश्मन-दल की-
हार करारी होगी।

जान हमारी जायेगी पर-
झंडा नहीं झुकेगा;
विजय हेतु अभियान-विजय है-
जो अब नहीं रुकेगा।

सीमा पर तैनात पहरूए-
घर-घर में नर-नारी;
सभी तरह से भारत रक्षा-
की करते तैयारी।

नर-नारी सब डटे हुए हैं-
सीमा हो या घर हो;
जन-मन प्रतिपल दुहराता है-
भारत माँ की जय हो।

सब कहते हैं चौकस रहना-
दुश्मन बड़ा छली है;
डरना मत, जो लड़कर मरता-
भू पर वही बली है।

बढ़ता-पग-पग पीठ न देता-
सीना तान खड़ा है;
सभी तरह से सीमा पर का-
वीर जवान बड़ा है।

चलती है वर्फीली आँधी-
ठंड भयंकर पड़ती;
ऐसे हैं श्रृंग जहाँ पर-
साँस न खुलकर चलती।

वहाँ पहुँच कर वीर हमारे-
चौकस रहते हरदम;
लेकिन क्षणभर भी न कभी ये-
हुए वहाँ भी वेदम।

सूत्र वद्ध हो एक शक्ति-सा-
देश खड़ा है पूरा;
वीर! तुम्हारा नहीं रहेगा-
सपना कभी अधूरा।

स्वप्न तुम्हारा पूरा होगा-
भागेगा अब दुश्मन;
खाली होगा घुसपैठी से-
भरत-भूमि का कण-कण।

आजादी लाने की खातिर-
हमने दी कुर्बानी;
इसे सुरक्षित रखने को अब-
तत्पर है वलिदानी।

चौदह

पुण्यवती भारत की धरती-
इसकी गाथा न्यारी;
आज यहाँ कण-कण में पौरुष-
की जगती चिनगारी।

तुरत चेत निज पाप देख ले-
तेरा काल खड़ा है;
भारत का छोटा-सा जर्रा-
तुझ से बहुत बड़ा है।

चुटकी में तुम पिस जाओगे-
ऐसी शक्ति यहाँ है;
मिट जाओगे नहीं मिलेगा-
तेरा चिन्ह कहाँ है।

तुमने खोला युद्ध क्षेत्र, हम-
लड़ने आए डट कर;
हम खोलें तो रह जाओगे-
घर में कहीं सिमट कर।

महायुद्ध यदि थोपोगे तो-
मँहगा तुम्हें पड़ेगा;
अरब सिन्धु तक आकर भारत-
अपना युद्ध लड़ेगा।

माना, तुमने कुटिल रीति से-
आहत हमें किया है;
मेरे वक्ष स्थल पर तू ने-
गहरा घाव दिया है।

इतने पर भी क्षमा करेंगे-
हम तो शान्त रहेंगे;
लेकिन बोलो कुटिल भाव क्या-
तुम से छूट सकेंगे?

✦ ✦ ✦

लड़कर यहाँ शहीद हुए हैं-
कितने वीर हमारे;
हमको इन पर बहुत नाज है-
भारत माँ के प्यारे।

राँची, मेरठ, दिल्ली का तो-
कोई राजस्थानी;
कोई चेन्नई, हरियाणा का-
बंग देश का प्राणी।

उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम-
भू का कोना-कोना;
एक डोर में बँधा हुआ है-
सब का रूप सलोना।

सीमा पर तैनात सिपाही-
चाहे रहे जहाँ का;
उसकी रग में खून दौड़ता-
केवल हिन्दुस्तां का।

जो शहीद हो गए, भला वे-
कौन राज्य किस भू के;
नाम-गाँव मत पूछो; आओ-
उनकी पद-रज छू के।

जो भी हुए शहीद हमारे-
वे हैं हिन्दुस्तानी;
याद करेंगे भारतवासी-
उनकी यह कुर्बानी।

जो शहीद आते हैं घर पर-
उनको करे प्रणाम;
करता भारत वर्ष समूचा-
उनको आज सलाम।

किसी राज्य या किसी क्षेत्र से-
उनको मत पहचानो;
वीर-प्रसू भारत की धरती-
के सपूत हैं, मानो।

भिन्न वेश, औ' भाषाएँ पर-
एक रक्त की लाली;
कंधा-कंधा भिड़ा देश की-
करते हैं रखवाली।

उनमें कोई भेद न मिलता-
सब धुन के मतवाले;
भारत माँ की वेदी पर सब-
शीश चढ़ाते वाले।।

याद करेंगे युग-युग तक सब-
उनकी गाथा गाकर;
प्रगति प्रेरणा पायेंगे सब-
उन पर फूल चढ़ाकर।

✦ ✦ ✦

जय हो अमर शहीद देश के-
हम सब शीश नवाते;
तेरे पावन बलिदानों की-
गाथा हम नित गाते।

तुमने जो बलिदान दिया है-
व्यर्थ न होने देंगे;
दुश्मन का षड्‌यंत्र कभी भीं-
पूर्ण न होने देंगे।।

पन्द्रह

दक्षिण सागर-तट पर देखो-
    कोई चिता सुलगती;
लाल अग्नि की लपट धरा से-
    आसमान तक लगती।

आज यही कर्त्तव्य तुम्हारा-
धर्म यही तुम जानो;
मातृ-भूमि के तुम रक्षक हो-
अपने को पहचानो।

माँ ने कुंकुम-रोली लेकर-
टीका उसे लगाया;
रण में सदा अडिग तुम रहना-
कह कर सब समझाया।

✦ ✦ ✦

तुरत वहीं पर पिता पधारे-
बोले- बेटा, जाओ;
भरत-भूमि के नौनिहाल तुम-
इसका मान बढ़ाओ।

आज यही है कर्म पुण्य का-
धर्म यही है प्यारे;
कभी न कोई शत्रु तुम्हारे-
गढ़ में पाँव पसारे।

निर्भय होकर बढ़ना पथ पर-
आगे बढ़ते जाना;
दुश्मन को तुम पीठ कभी भी-
रण में नहीं दिखाना।

आज मुझे है गर्व कि मैंने-
भारत माँ के पग पर;
कमल अमल जीवन-बगिया का-
सादर किया निछावर।

धुँआ उठा औ' सुरभित नभ था-
गूँजी अनुपम वाणी;
सदा रहेगी वीर तुम्हारी-
भू पर अमर कहानी।

अमर शहीदों की गाथाएँ-
जन-जन नित दुहराते-
जो भी कहते इस गाथा को-
कहते नहीं अघाते।।

लोग-बाग सब ओर जुटे हैं-
आज विदाई देने को;
बहनें आई है भाई की-
आज बलैया लेने को।

खड़ी द्वार पर बहनें कहतीं-
जल्दी भइया आओ;
रक्षा-सूत्र लिए हूँ कर में-
आकर लो बँधवाओ।

देखो, पीछे कभी न मुड़ना-
आगे बढ़ते जाना;
वक्त मिला है बड़े भाग्य से-
खुलकर शौर्य दिखाना।

भाग्यवती वह बहन कि जिसका-
भाई रण में जाता;
जिसका भाई पीठ समर में-
रिपु को नहीं दिखाता।

भाई रिपु को मारे, बहना-
चकमक गेह सँवारे;
भाई और बहन के सचमुच-
करतब न्यारे-न्यारे।

भाई बोला- मैं तो बहना।
शीघ्र चला अब रण में,
लेकिन साथ-साथ तेरे, रहेगी-
मन तक इस आंगन में।

माना आज समय है भीषण-
रुक नहीं अब सकता,
दुश्मन से लड़ने की खातिर-
त्याग सभी कुछ सकता।

लेकिन कुछ दिन बाद शीघ्र ही-
आकर बहना तेरी;
ब्याह रचाऊँगा फिर घर में-
खूब बजेगी भेरी।

सुनकर बहना नीचे सिर कर-
बोली- जल्दी जाओ;
मातृ-भूमि की लाज बचाओ-
रिपु को मार भगाओ।

भाई का सिर चूम बहन तो-
आई अपने घर में;
और उधर भाई भी दौड़ा-
आया गहन समर में।

✦ ✦ ✦

आज वही घर पर आया है-
सेना का रथ खेते;
सैनिक सब बंदूक उठा के-
उसे सलामी देते।

सैनिक के सम्मान सहित सब-
बात हुई है पूरी;
सेना की कोई भी इच्छा-
रहती नहीं अधूरी।

वहीं समाधि बनी है उसके-
घर के सम्मुख पावन;
फूल चढ़ाते आ-आकर सब-
लोग वहाँ मनभावन।

बहना उस पर दीप जलाती-
बैठ वहाँ पर गीत सुनाती-

जगमगा रहा दिया समाधि पर-
जगमगा रहा दिया मजार पर-
यह पड़ाव है अमीर शहीद का-
चाँद था जो दूज का औ' ईद का-

जो चला किया सदा, दुधार पर-
जगमगा रहा दिया समाधि पर-
जगमगा रहा दिया मजार पर-

यह जिधर चला जवानियाँ चलीं-
इन्कलाब की कहानियाँ चलीं-

फूल के चरण चले अंगार पर-
जगमगा रहा दिया समाधि पर-
जगमगा रहा दिया मजार पर-

प्रेम भाव से सब सुनते हैं-
उसकी अमृत वाणी;
सब दिन अमर रहेगी भू पर-
वीरों की कुर्बानी।

वीरों का आदर्श सदा-
इतिहास बनाया करता;
स्वयं भविष्यत् इससे ही निज-
रूप सजाया करता।।

सत्रह

एक खड़ी नव वाला सम्मुख-
देख रही है राह;
शायद कोई आकर उसका-
शमन करेगा दाह।

बड़ी देर से खड़ी-खड़ी यह-
बीन रही है फूल;
सूख न जाये पंखुरियाँ औ'-
पड़े न इन पर धूल।

✦ ✦ ✦

उस दिन जो कुछ घटा यहाँ पर-
सब है इसको याद;
आज याद कर उस घटना को-
होता कुछ उन्माद।

यही युवक था जानेवाला-
दूर छोड़कर गाँव;
मातृ-भूमि की रक्षा खातिर-
बढ़ा चुका था पाँव।

सहसा वही सलोनी बोली-
जागो हे चितचोर,
शेष कहानी- मैं भी-
कहता हूँ [illegible]।

जब तक रिपु को मार भगाऊँ-
करना मुझको याद;
लेकिन मन पर कभी न लाना-
कोइ भी अवसाद।

घर पर जाकर लाई बाला-
फूलों का मृदु हार;
"जय जवान" कह बोली तत्क्षण-
अमर हमारा प्यार।

एक फूल को चूम युवक ने-
दिया बाल में खोंस;
बोली बाला- प्यार हमारा-
देगा नित परितोष।

✦ ✦ ✦

आज वही बाला बैठी है-
लेकर पुष्पित हार;
अमर शहीद हुआ है उसका-
प्रेमी राजकुमार।

वही मगन है, जिसको चाहा-
वह है अद्‌भुत वीर;
दुश्मन दल को मार भगाया-
मेरा वीर प्रवीर।

अर्थी आई गूँज उठा नभ-
जय-जय अमर शहीद;
ऐसा उत्सव छाया मानो-
आई हो ज्यों ईद।

बच्चा-बच्चा लगा चूमने-
जय-जय अमर जवान;
अमर रहेंगे सदा हमारी-
धरती के दिनमान।

बाला ने झट हार पिन्हाया-
लिया पाँव को चूम;
बोली- मैं तो अतुल खुशी से-
आज उठी हूँ झूम।

✦ ✦ ✦

देश-राष्ट्र के लिए यहाँ जो-
देते अपना प्राण;
उनके ही कदमों पर चलकर-
बनता देश महान।

भारत की सीमा पर देखो-
दहक रही है आग;
माँग रही है भारत माता-
हम से अद्भुत त्याग।

दुश्मन जब तक निकल न जाता-
नहीं मिलेगी शान्ति;
आज जगानी है कण-कण में-
हमें विजय की क्रान्ति।

राष्ट्र-धर्म है यही, यही है-
जीवन का सत्कर्म;
अपनी बलि दे देना जग में-
सब धर्मों का मर्म।

मातृभूमि की खातिर जो भी-
देते अपने प्राण;
व्यर्थ न जाता कभी भुवन में-
उनका वह बलिदान।

उनकी पुण्य तपस्या से ही-
खिलता नया प्रकाश;
भावी पीढ़ी जग कर उससे-
गढ़ती नव इतिहास।।

अठारह

संकट की जब वेला आती–
भेद न कोई टिकता;
अलग–अलग भावों का घेरा–
अनायास ही मिटता।

पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-
अब कितना अलबेला,
अमर शहीदों की समाधि पर-
लगता प्रतिदिन मेला।

जहाँ कहीं जब किसी क्षेत्र का-
वीर- वीर-गति पाता;
एक साथ सम्पूर्ण देश में-
नया हिलोरा आता।

चिता सुलगती जहाँ किसी की-
लपटें नभ तक उठती;
सीमा-हीन असीम परिधि में-
वह अनन्त से जुड़ती।

और पुनः धरती के कण-कण-
पर आभा छिटकाती;
बनकर नयी प्रेरणा भू पर-
पौध नयी उग आती।

सरहद पर जो खड़ा पहरुआ-
नहीं अकेला होता;
देश समूचा साथ उसी के-
प्रतिपल हँसता रोता।

जन-जन की धड़कन में उसका-
श्वास समाहित रहता;
उसकी नस-नस में जन-जन का-
रक्त प्रवाहित रहता।

एक सूत्र में गुंथे हुए हैं-
भारत के सब प्राणी;
एक भाव में गूँज रही है-
सब की अनुपम वाणी।

नहीं अलग है कोई, सबमें-
एक भावना जगती;
अलग-अलग आँखों में झाँको-
एक कल्पना जगती।

मुख्य बात है जीवन में-
आदर्श प्रबल अपनाओ;
महत् कार्य के किसी केन्द्र पर-
अपने को बैठाओ।

व्यष्टि नहीं, तब वह समष्टि का-
एक अंग कहलाता;
बूँद सिन्धु में मिलकर विस्तृत-
सागर ही हो जाता।

सब का, सुख-दुख अपना होता-
तभी जीव यश पाता;
निखिल विश्व उसके अन्तर में-
सुख अर्णव अपनाता।

सीमा पर जो जाते लगता-
साथ सदा हम उनके;
अनुभव होता रिपु को हम भी-
मार रहे हैं धुन के।

मरना-जीना लगा हुआ है-
कौन भला बच पाया;
जाना उसका निश्चय मानो-
जो भी जग में आया।

जीवन के इस सीमित क्षण में-
काम बड़ा है करना;
महाकाल की तुनुक शिला पर-
भावी पथ है गढ़ना।

इसे जानकर जो भी अपना-
पंथ सुगम कर जाता;
वही यहाँ भूतल पर जीने-
का सच्चा सुख पाता।

मातृ-भूमि की खातिर जीना-
बड़े भाग्य से होता;
और नहीं तो नर शरीर का-
केवल बोझा ढोता।

वढो वीरर्वर। कभी तुम्हारे-
पाँव नहीं रुक पाएँ;
वर्फीली झंझा के झोंके-
तुझको नहीं झुकाएँ।

पथ पर जो चट्टान मिले, वह-
चूर्ण स्वयं हो जाए;
मातृ-भूमि का केतु तिरंगा-
हिमगिरि पर लहराए।

वढ़ते चलो जवान तुम्हारा-
पूर्ण मनोरथ होगा;
सभी तरह से सुगम तुम्हारे-
जीवन का पथ होगा।।

उन्नीस

देवालय में भीड़ भरी है–
टन–टन घण्टी बजती;
पूजन अर्चन की बेला है–
मधुर आरती सजती।

लोग-बाग सब झूम रहे हैं-
नव-नव वन्दन गाते;
माँ दुर्गा के चरण-सरोरूह-
पर सब शीश नवाते।

जय माँ दुर्गे! जय माँ दुर्गे।
देवि भवानी जागो;
मातृ-भूमि पर संकट आया-
माँ कल्याणी जागो।

माँ संतान तुम्हारी मइया-
करूणा के अभिलाषी;
सदा तुम्हारे दर्शन को ही-
आँखें रहती प्यासी।

यहाँ हमारा नहीं कहीं कुछ-
सब प्रसाद है तेरा;
तेरी बगिया में दुश्मन ने-
आज लगाया डेरा।

जागो मइया अपनी बगिया-
नष्ट न होने देना;
सीमा पर हैं भक्त तुम्हारे-
कष्ट न होने देंगे।

मातृ-भूमि की रक्षा में हम-
आगे बढ़ते आए;
विघ्नों के पर्वत के सम्मुख-
हृदय नहीं घबड़ाए।

रिपु को दूर भगाने तक हम-
शान्ति नहीं ले सकते;
मातृ-भूमि की रक्षा खातिर-
मस्तक तक दे सकते।

भारत के जन-जन की इच्छा-
माते पूर्ण करेगी;
रग-रग के ठंडे शोणित में-
तू ही अनल भरेगी।

जय माँ दुर्गे। जय माँ दूर्गे।
भक्ति हृदय में भर दे;
भरत-भूमि की संतानों में-
जय की शक्ति अमर दे।

✦ ✦ ✦

उधर सभी मस्जिद में करते-
जन-जन आज इबादत;
अल्लाताला से कहते हैं-
दूर करो यह गुरबत।

दुआ माँगते सभी खुदा से-
हमको राह दिखाओ;
दुश्मन जो घुस आया घर में-
उसको मार भगाओ।

हाथों का सम्पुट कर आगे-
दुआ माँगते जन-जन;
सदा वतन की खिदमत में ही-
लगा रहे यह जीवन।

सब दुश्मन को मार भगाएँ-
अल्ला देगा ताकत;
हम कुर्बानी देते आए-
यही हमारी ख़िदमत।

✦ ✦ ✦

रोज वहाँ गुरूद्वारे में भी-
होता पूजन-अर्चन;
माँग रहे सब यही कि गुरूवर-
सफल करो आराधन।

दुश्मन घर में घुस आया है-
उसको मार भगाएँ;
कहीं किसी घुसपैठी को अब-
ठाँव न मिलने पाए।

गुरुवर हमको शक्ति अतुल दो-
रण में शौर्य दिखाएँ;
जान भले ही जाए लेकिन-
मस्तक नहीं झुकाएँ।

✦ ✦ ✦

गिरजाघर में भी सब जाकर-
यही याचना करते;
भागे शत्रु हमारे घर से-
यही प्रार्थना करते।

शान्त नहीं है कोई भी जन-
यही सभी का चिन्तन;
जैसे भी हो भरत-भूमि से-
भागे जल्दी दुश्मन।

एक लहर-सी दौड़ रही है-
दिशा-दिशा अकुलाई;
बढ़ते वीर जवान- साथ में-
शंख ध्वनि लहराई।

आया है सैलाब जोश का-
जन-जन जाग रहा है;
वीर जवान बढ़े हैं आगे-
दुश्मन भाग रहा है।

बीस

कण-कण में जय-घोष जगा है-
मन से मिटी उदासी;
बिगुल बजा, रण-भेरी गूँजी-
जागे भारतवासी।

जो भी जहाँ खड़े हैं जैसे-
मन से सब उत्साहित;
उनकी रग-रग में बिजली का-
होता वेग प्रवाहित।

बच्चे-बूढ़े जाग गए सब-
सगर शान्त न होगा;
किसी तरह भी देश हमारा-
अब आक्रान्त न होगा।

घर-घर लगता युद्ध-शिविर हो-
जन-जन बने सिपाही;
सब कहते हैं भारत की अब-
होगी नहीं तबाही।

घर में सब मुस्तैद कि जैसे-
सेना रहती रण में;
वीर जवानों की खातिर है-
आदर सबके मन में।

रसद और सन्देश कुशल के-
प्रतिपल आते-जाते;
वीर-बाँकुड़े भारत भर के-
स्नेह अहर्निश पाते।

जिससे जितना जो भी बनता-
सब कर्त्तव्य निभाते;
जन-जन सीमा तक जाने की-
उत्कट चाव दिखाते।

सुबह-शाम युवकों की टोली-
देती रहती फेरी;
उठो युवक-गण चलो समर में-
बजती है रण-भेरी।

गूँज रही है दिशा-दिशा में-
सब की पौरुष वाणी;
अधर-अधर पर थिरक रहा है-
गीत-प्रखर-अभियानी।

रोष भरा है सबके मन में-
पाँव सभी के बढ़ते;
काश! वहाँ जाकर सीमा के-
पर्वत पर हम चढ़ते।

✦ ✦ ✦

निकल रही है जगह-जगह पर-
युवक-गणों की टोली;
बोल रहे सब- चलो खेलने-
दुश्मन के घर होली।

दुश्मन ने है स्वयं बुलाया-
करगिल तक में घुसके;
हम सब भी अब ईद मना लें-
जाके घर में उसके।

हम हैं शान्त मगर यह चुप्पी-
और नहीं रह सकती;
भारत के मनसूबे की-
दीवार नहीं ढह सकती।

बढ़ो जवानो। हम सब भी हैं-
साथ तुम्हारे आते;
तन-मन-धन न्योछावर करके-
पथ पर फूल बिछाते।

✦ ✦ ✦

शोषित करते दान कि तुझ में-
रक्त न कम हो पाए;
तेरे घावों पर हम सब-
ममता लेप लगाए।

रक्त-दान के शिविर लगे हैं-
बच्चे-बूढ़े आते;
वीरों के हित सब कुछ देकर-
मन से मोद मनाते।

नयी नवेली बहुओं तक ने-
जेवर दान दिया है;
अंतिम विजय हमारी होगी-
इतना मान दिया है।

बढ़ते वीर जवानों के पग-
कभी न रुकने पाए;
करगिल से भी उच्च शिखर पर-
जय का केतु उडाए।

भारत का सिर दर्द बना जो-
क्षेत्र उसे हम लेंगे;
अपने घर के पास शत्रु को-
रहने कभी न देंगे।

पास वही रह सकता जो है-
मन से मित्र हमारा;
जिसकी नस-नस में बहती है-
स्नेह-सलिल की धारा।

लेकिन जो दुश्मन है उसको-
लड़कर शान्त करेंगे;
कभी न उसको अपने व्रण पर-
नमक छिड़कने देंगे।

✦ ✦ ✦

बढ़ते वीर जवान साथ में–
देश समूचा चलता;
शीश उठा कर देखो नभ में–
नूतन सूर्य निकलता।

छिटक चुकी है लाली ऊपर–
होगी विजय तुम्हारी;
मिटने को ही है अब अपने–
पथ की सब अँधियारी।।

इक्कीस

बढ़ो-बढ़ो ओ वीर जवानो।
होगी विजय तुम्हारी;
मातृ-भूमि का कण-कण जागा-
बनकर नव चिनगारी।

तुमसे सबका मस्तक ऊँचा–

तुम हो सेना की आशा;

और तुम्ही हो मातृ भूमि के-

गौरव की परिभाषा।

आज नया अभियान विजय का–

देख रहा जग सारा;

वीर जवानों तुम्हीं देश की–

आँखों के ध्रुव–तारा।

जब–जब संकट पड़ा देश पर–

तुम ही आगे आए;

महा प्रलय के अन्धकार में–

तुम ने दीप जलाए।

आज हिमालय की चोटी पर–

दुश्मन फिर चढ़ आया;

छद्मवेश में करगिल तक वह–

चुपके से बढ़ आया।

✦ ✦ ✦

मातृभूमि की पावन मिट्टी–

सबका अक्षत–चंदन;

तिलक लगा कर इस माटी का–

करते सब अभिनन्दन।

शपथ यही है इस माटी को-
भ्रष्ट न होने देंगे;
दुश्मन के घातों से इसको-
दलित न होने देंगे।

जो भी इस पर पाँव बढ़ाए-
उसको सबक सिखाओ;
बुला रही है भारत माता-
आओ वीरों, आओ।

वीर जवानो, कृष्ण रूप बन-
धर्म-क्षेत्र में आओ;
पांचजन्य का घोष पुरातन-
जग को पुनः सुनाओ।

एक बार फिर देखे दुनिया-
हम में कितना बल है;
वीर जवानों की रग-रग में-
जलता हुआ अनल है।

विजय हमारी होगी निश्चय-
वीरो शौर्य दिखाओ;
अपने प्रबल पराक्रम से तुम-
माँ का मान बढ़ाओ।

✦ ✦ ✦

हिमगिरि के कैलाश शिखर से-
देख रहे हैं शंकर;
दुश्मन ने थोपा है हम पर-
कैसा भीषण संगर।

बढ़ते वीर जवान जरा तुम-
मन में ध्यान लगाओ;
देवों के भी महादेव के-
पद में शीश नवाओ।

पुनः बजा दें डमरू शंकर-
महा-प्रलय मच जाए;
न्याय-नीति का झंडा फिर से-
भारत में फहराए।

✦ ✦ ✦

बढ़ते वीर जवान तुम्हारा-
वेग नहीं रूक सकता;
देश तुम्हारे साथ सदा है-
शीश नहीं झुक सकता।

गिरे विकट चट्टान, कुहासा-
छाए बाधा बनकर;
फिर भी पीछे पाँव न देना-
बढ़ते जाना तनकर।

साँसों में तूफान तुम्हारे-
दृग में हैं अंगारे;
किस में दम है जो फिर तेरे-
घर में पाँव पसारे।

बढ़ो वीर पथ खुला हुआ है-
मन की जोत जगाओ;
घिरी घटा में बिजली बनकर-
सब को राह दिखाओ।

राष्ट्र ध्वजा है कर में इसको-
कभी न झुकने देना;
दुश्मन के कुकृत्यों का तुम-
गिन-गिन बदला लेना।

मातृभूमि के तुम संरक्षक-
माँ का मान बढ़ाओ;
जाओ वीरों मुक्त गगन में-
राष्ट्र-ध्वजा फहराओ।।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः